प्राथमिक छात्राध्यापकों की स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता

डॉ. महेश नारायण दीक्षित*

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों की स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति उनकी स्व–कार्यसाधकता के स्तर को ज्ञात करने के लिए किया गया। लिंगभेद, शैक्षिक प्रवाह तथा निवास क्षेत्र के संदर्भ में प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों की स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता को ज्ञात करना, आदि इस अध्ययन के अन्य उद्देश्य थे। अध्ययन के परिणाम स्वरूप पाया गया कि स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों की स्व–कार्यसाधकता शिक्षिकाओं की अपेक्षा उच्च थी, तथा विज्ञान प्रवाह की अपेक्षा सामान्य प्रवाह के प्राथमिक शिष्य–शिक्षक स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति अधिक स्व–कार्यसाधकता स्तर वाले पाये गये। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में रहने वाले प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों की स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

प्रस्तावना

कुशल शिक्षक, गुणवत्तायुक्त शिक्षा व्यवस्था के निर्माण मे महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। ज्ञानाधारित इस सदी में आवश्यक है कि प्राथमिक शिष्य–शिक्षक, एवं शिक्षक–प्रशिक्षक स्वयं को नवीन ज्ञान, तकनीकी एवं कौशल्यों से सज्ज रखें। स्वयं सीखने की कला अर्थात स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति उन्मुख हों। क्योंकि शिक्षक किसी कार्य के लिए तभी अपने विद्यार्थीयों को प्रेरित कर सकता है जब वह स्वयं वैसा करता हो।

स्व–निर्देशित अधिगम के लिए व्यक्ति में कुछ खास व्यक्तित्व संबंधी गुणों का होना आवश्यक है। जिसमें स्व–निर्देशित अधिगम कर लेने के प्रति व्यक्ति की स्व–कार्यसाधकता को महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में स्थान दिया गया है (ब्रॉउन, 2005)।

स्व–कार्यसाधकता (Self-efficacy)

स्व–कार्यसाधकता का सम्प्रत्यय 19 वीं शताब्दी में बंडुरा (Bandur̀) के सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत (Social cognitive theory) के फलस्वरूप प्रचलित हुआ है। स्व–कार्यसाधकता से तात्पर्य व्यक्ति के स्वयं के प्रति उस विश्वास से है जिसमें वह, यह मानता है कि किसी कार्य की सफलतापूर्वक समाप्ति अथवा किसी शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति की वह क्षमता रखता है।

स्व–कार्यसाधकता का उच्चतम स्तर व्यक्ति की निपुणता एवं ढ़ इच्छाशक्ति का विकास करता है। अपनी योग्यता के प्रति आश्वस्त व्यक्ति किसी कठिन शैक्षिक कार्य को एक चुनौती के रूप में स्वीकार करता है तथा उस पर पूर्ण निपुणता प्राप्त करना चाहता है। बंडुरा (1994) के अनुसार ऐसा स्व–कार्यसाधक दृष्टिकोण आन्तरिक अभिरूचि को विकसित करता है तथा मनोयोग से कार्य करने के लिए प्रेरित करता है।

स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता

अहमद (2008, पृ. 453) ने स्व–निर्देशित अधिगम की संकल्पना स्पष्ट करते हुए लिखा है, "स्व–निर्देशित अधिगम एक प्रक्रिया है जिसमें अध्येता, अकेले या दूसरों के सहयोग से, स्व–अधिगम संबंधी आवश्यकताओं की खोज, निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति एवं उसमें प्रवृत्त रहने तथा प्रगति संबंधित मूल्यांकन का उत्तरदायित्व स्वयं उठाता है"। स्व–निर्देशित अधिगम, अधिगम के एक नवीन अभिगम के रूप में पहचाना जा चुका है जिसमें यह ढता पूर्वक माना जाता है कि अध्येता अपने अधिगम के प्रति स्वयं उत्तरदायी है तथा वह स्वयं को अधिगम के लिए निर्देशित करने की क्षमता रखता है स्मेड्ले (Smedley, 2007)।

स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता से तात्पर्य प्रशिक्षणार्थियों की उन स्व–क्षमताओं के प्रति विश्वास प्रदर्शन से है जो स्व–निर्देशित अधिगम में सहायक हैं। स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति विश्वास प्रदर्शित करनेवाला विद्यार्थी निम्नलिखित कार्यो को कर लेने के संदर्भ में अपने समर्थ

*सहा. प्राध्यापक, शिक्षण महाविद्यालय, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद (गुजरात)

पर विश्वास प्रदर्शित करता है–

1. आवश्यकतानुसार शैक्षिक हेतु निर्धारण कर लेने के प्रति विश्वास।
2. विषय–वस्तु की गहन समझ प्राप्त कर लेने के प्रति विश्वास।
3. अध्ययन के लिए समय–प्रबंधन एवं योग्य आयोजन कर लेने के प्रति विश्वास।
4. स्व–प्रगति का मूल्यांकन एवं आवश्यकतानुसार अध्ययन गति, समय एवं प्रयासों का नियमन कर लेने के प्रति विश्वास।
5. अध्ययन पर सतत ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता के प्रति विश्वास।
6. आवश्यकतानुसार उपयुक्त पाठ्यसामग्री, पद्धति, प्रयुक्ति एवं सहायक सामग्री के चयन तथा विशेषज्ञ व्यक्तियों का सहयोग प्राप्त कर लेने के प्रति विश्वास।

अध्ययन–अध्यापन की प्रक्रिया से संबंधित अनेक संप्रत्ययों के अनुसंधान में स्व–कार्यसाधकता के संबंध को जानने का प्रयास किया गया है। ऐसे में स्व–निर्देशित अधिगम (Self-directed learning) के प्रति हमारे प्राथमिक शिष्य–शिक्षक कितने आत्मविश्वस्त हैं को जानने के लिए यह अनुसंधान किया गया। इसके साथ ही यह जानने का भी प्रयास किया गया कि, क्या लिंगभेद, शैक्षिक प्रवाह तथा निवास क्षेत्र का अंतर उनके स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता के स्तर को प्रभावित करता है?

अध्ययन के उद्देश्य

1. प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों की स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति उनकी स्व–कार्यसाधकता के स्तर को ज्ञात करना।
2. प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों की स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता पर उनके लिंग, शैक्षणिक प्रवाह, एवं निवास क्षेत्र के प्रभाव को ज्ञात करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की स्व–निर्देशित अधिगम स्व–कार्यसाधकता मापदंड पर प्राप्त औसत प्राप्तांकों के बीच सार्थक अन्तर नहीं होगा।
2. सामान्य एवं विज्ञान प्रवाह के प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों की स्व–निर्देशित अधिगम स्व–कार्यसाधकता मापदंड पर प्राप्त औसत प्राप्तांकों के बीच सार्थक अन्तर नहीं होगा।
3. शहरी एवं ग्रामिण क्षेत्र के प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों की स्व–निर्देशित अधिगम स्व–कार्यसाधकता मापदंड पर प्राप्त औसत प्राप्तांकों के बीच सार्थक अन्तर नहीं होगा।

अध्ययन की योजना

प्रस्तुत अनुसंधान में सर्वेक्षणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया।

जनसंख्या: अहमदाबाद जिले में स्थित सरकारी एवं सरकार अनुदानित प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण की संस्थाओं (अध्यापन मंदिर एवं जिला शिक्षण तालीम भवन) के द्वितीय वर्ष के सभी प्रशिक्षणार्थी इस अध्ययन की जनसंख्या के रूप में लिए गये।

न्यादर्श: याच्छिक रूप से 7 संस्थाओ का चयन कर गुच्छ न्यादर्श पद्धति से द्वितीय वर्ष के सभी प्रशिक्षणार्थियों को न्यादर्श में समाविष्ट किया गया। न्यादर्श में कुल 263 प्रशिक्षणार्थी चयनित हुए।

उपकरण: भावी प्राथमिक शिक्षकों की स्व–निर्देशित अधिगम स्व–कार्यसाधकता को मापने के लिए दीक्षित (2011) द्वारा गुजराती भाषा में लिकर्ट पद्धति के आधार पर निर्मित स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता मापदंड का उपयोग किया गया जिसमें कुल 10 विधान हैं। स्व–निर्देशित अधिगम स्व–कार्यसाधकता मापदंड की अर्ध–विच्छेद एवं अल्फा विश्वसनीयता का मान क्रमशः .53 एवं .59 था। स्व–निर्देशित अधिगम स्व–कार्यसाधकता उपमापदण्ड, विषयवस्तु वैधता (Content Validity) से युक्त पाया गया।

प्रदत्त विश्लेषण एवं अर्थ घटन

प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों द्वारा स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता के स्तर को ज्ञात करने के लिए 10 विधानो से युक्त स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता मापदंड का प्रशासन न्यादर्श पर किया गया।

प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों की स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता

सारणी 1 में प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों द्वारा स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता का सांख्यकीय वर्णन दिया गया है–

सारणी 1

प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों की स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता की सांख्यकीय गणनाएं

सांख्यकीय प्रवृत्तियां	मान
न्यूनतम प्राप्तांक	6
अधिकतम प्राप्तांक	28
मध्यमान	18.44
मध्यांक	18
प्रमाण विचलन	3.91
कुकुदता	.108
विरूपता	.338

सारणी 1 से स्पष्ट है कि स्व–कार्यसाधकता मापदंड पर प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों का विस्तार 6 से लेकर 28 तक था। प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों द्वारा स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता मापदंड पर मिले प्राप्तांकों का मध्यमान 18.44 एवं मध्यस्थ का मान 18 प्राप्त हुआ। स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता मापदंड पर प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर की गयी कुकुदता एवं विरूपता के गणनाओं का मान क्रमशः .108 एवं .338 रहा। कुकुदता का प्राप्त मान प्रदत्त की कूट कुकदता को दर्शाता है। विरूपता का प्राप्त मान प्रदत्त की सामान्य धन विरूपता को द्योतित करता है। प्राप्त विरूपता के मान से स्पष्ट है कि प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों के द्वारा मापदंड पर औसत प्राप्तांक की अपेक्षा कम प्राप्तांक लाने वाले प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों की संख्या अधिक थी।

लिंग, प्रवाह तथा निवास क्षेत्र के संदर्भ में स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता

स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता के साथ प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों के लिंग एवं प्रवाह के प्रभाव को ज्ञात करना अध्ययन का दूसरा उद्देश्य था। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए तीन शून्य परिकल्पनाओं (परिकल्पना–1, परिकल्पना–2, एवं परिकल्पना–3) का परीक्षण 0.05 सार्थकता स्तर पर किया गया। परिकल्पनाओं के परीक्षण के संदर्भ में प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों द्वारा स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता मापदंड पर प्राप्त प्राप्तांको के मध्यमान, प्रमाण विचलन एवं टी–अनुपात की गणना की गयी जिसका विवरण सारणी–2 में दिया गया है।

सारणी 2

प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों के लिंग, शैक्षणिक प्रवाह एवं निवास क्षेत्र की भिन्नता के आधार पर उनके स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता स्तर में अंतर की सार्थकता

चर	स्तर	प्रा. शि. शिक्षकों की संख्या	मध्यमान	प्रमाण विचलन	टी–अनुपात	.05 स्तर सार्थकता
लिंग	स्त्री	158	17.99	3.9	2.31	सार्थक है
	पुरुष	105	19.13	3.8		
प्रवाह	सामान्य	216	18.73	3.77	2.60	सार्थक है
	विज्ञान	47	17.11	4.33		
निवास क्षेत्र	शहरी	174	18.27	4.05	0.97	सार्थक नहीं है
	ग्रामीण	89	18.76	3.75		

सारणी 2 से स्पष्ट है स्त्री (मध्यमान = 17.99, प्र. वि. = 3.9) एवं पुरूष (मध्यमान = 19.13, प्र. वि.= 3.8) प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों के औसत प्राप्तांको के बीच अन्तर की सार्थकता जानने के लिए टी–अनुपात की गणना की गई जिसका मान 2.31 रहा जो .05 स्तर पर सार्थक था। अतः अध्ययन की शून्य परिकल्पना–1 को अस्वीकार किया गया। जिसका अर्थ है कि लिंग भेद का प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों के स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता स्तर पर सार्थक असर देखने को

मिला। प्राथमिक शिष्य–शिक्षक स्व–निर्देशित अधिगम कर लेने के प्रति प्राथमिक शिष्य–शिक्षिकाओं की अपेक्षा उच्च स्व–कार्यसाधकता से युक्त पाये गये।

सारणी–2 से स्पष्ट है सामान्य (मध्यमान = 18.73, एवं प्र. वि. = 3.77) एवं विज्ञान (मध्यमान = 17. 11 एवं प्र. वि. = 4.33) प्रवाह के प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों के औसत प्राप्तांको के बीच अन्तर की सार्थकता जानने के लिए टी–अनुपात की गणना की गयी जिसका मान 2.60 रहा जो .05 स्तर पर सार्थक था। अतः अध्ययन की शून्य परिकल्पना–2 को अस्वीकार किया गया। परिणामस्वरूप यह पाया गया कि प्रवाह भेद प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों की स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति उनकी स्व–कार्यसाधकता पर सार्थक रूप से असर करता है। सामान्य प्रवाह के प्राथमिक शिष्य–शिक्षक स्व–निर्देशित अधिगम कर लेने के प्रति विज्ञान प्रवाह के प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों की अपेक्षा उच्च स्व–कार्यसाधकता स्तर से युक्त पाये गये।

सारणी–2 से स्पष्ट है कि शहरी (मध्यमान = 18.27, प्र. वि. =4) एवं ग्रामीण (मध्यमान = 18.76, प्र.वि. = 3.73) क्षेत्र के प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों के औसत प्राप्तांको के बीच अन्तर की सार्थकता जानने के लिए टी–अनुपात की गणना की गयी जिसका मान 0.97 रहा जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं था। अतः अध्ययन की शून्य परिकल्पना को अस्वीकार नहीं किया गया। जिसका अर्थ है कि प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों के निवास क्षेत्र का उनकी स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति उनकी स्व–कार्यसाधकता स्तर पर कोई असर नहीं होता। शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक शिष्य–शिक्षक स्व–निर्देशित अधिगम कर लेने के प्रति समान रूप से स्व–कार्यसाधकता से युक्त पाये गये।

अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ

स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता मापदंड पर प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों के द्वारा 30 तक के प्राप्तांक प्राप्त किये जा सकते थे जबकि प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों के प्राप्तांकों का औसत मात्र 18.44 रहा। प्राथमिक शिष्य–शिक्षिकाएं, शिक्षकों की अपेक्षा स्व–निर्देशित अधिगम कर लेने के प्रति निम्न स्व–कार्यसाधकता स्तर वाली पायीं गयी। इसी प्रकार विज्ञान प्रवाह के प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों का, सामान्य प्रवाह के प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों की अपेक्षा, स्व–निर्देशित अधिगम कर लेने के प्रति स्व–कार्यसाधकता का स्तर नीचा पाया गया। अतः प्राथमिक शिष्य–शिक्षकों की स्व–निर्देशित अधिगम के प्रति स्व–कार्यसाधकता को बढाने के लिए प्रशिक्षणात्मक कार्यक्रम आयोजित किये जाने चाहिए तथा इस दिशा में शिक्षक प्रशिक्षकों को भी चाहिये कि वे प्रशिक्षणार्थियों को इसके लिए प्रेरित करें। विज्ञान प्रवाह के शिष्य–शिक्षकों एवं शिष्य–शिक्षिकाओं के स्व–निर्देशित अधिगम कर लेने के प्रति स्व–कार्यसाधकता का स्तर क्यों कम है, इसके पीछे कौन से कारण जिम्मेदार हैं को अनुंसधान के माध्यम से यह ज्ञात करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ

अहमद, एम. (संपादित, 2008). कम्प्रेहेन्सिव डिक्सनरी ऑफ एज्युकेशन. नई दिल्लीः अटलांटिक पब्लिसर एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स लिमिटेड.

गुप्ता, एस.पी. (2005). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन. इलहाबादः शारदा पुस्तक भवन प्रकाशक.

दीक्षित, एम. एन. (2011). भावी प्राथमिक शिक्षकों की स्व–निर्देशित अधिगम क्षमता एवं शैक्षिक उपलब्धि का संबंध, प्रकाशित पीएच. डी. महाशोध प्रबंध, अहमदाबाद, गूजरात विद्यापीठ.

बंडुरा, ए. (1994). सेल्फ–इफिकेसी, वी.एस.रामचन्द्रन (संपादित), इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ह्यूमन बीहैविअर (वाल्यूम. 4, पृ.सं. 17–81). मई 22, 2009 को http://www-des-emory-edu/mfp/BanEncy-html से पुनः प्राप्त.

ब्रॉउन, पी. (2005). ह्वाट मेक्स अ गुड लर्नर? जुलाई 9,2007 को http://selfdirectedlearning-blogspot-com/2005/03/whatmakesgood&learnerhtml से पुनः प्राप्त.

स्मेड्ले, ए. (2007) दी सेल्फ–डाइरेक्टेड लर्निंग रेडिनेस ऑफ फर्स्ट इयर बैचलर ऑफ नर्सिंग स्टुडेन्टस. जर्नल ऑफ रिसर्च इन नर्सिंग, 12(4), 373–385. जनवरी 28, 2010 को http://jrn-sagepub-com/content/12/4/373-full-pdf से पुनः प्राप्त.